पूर्वोत्तर प्रभा
(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)
Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

अपर्णा महांति की कविताओं में स्त्री-प्रतिरोध का स्वर

दिब्यरंजन साहू
सहायक अध्यापक, आर्यभट्ट कॉलेज, झारसुगड़ा, ओड़िशा
ईमेल: dibyosahu25@gamil.com

शोध सारांश : प्रत्येक भारतीय भाषा में रचित साहित्य का अपना स्वतंत्र वैशिष्ट्य है। निश्चित रूप से भारतीय काव्य के इतिहास में समकालीन कविता का बहुत ही सार्थक एवं सजग हस्तक्षेप है। समकालीनता एक समय सापेक्ष अवधारणा है, ऐसे में समकालीन कविता का अपने समय एवं समाज की तत्कालीन स्थितियों एवं विचारधारा से प्रभावित होना स्वाभाविक है। स्पष्ट है, समकालीन ओड़िया कविता जगत में अपर्णा महांति एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में अविस्मरणीय हैं। निःसंदेह वह समकालीन ओड़िया कविता की वर्तमान पीढ़ी की मुखर अभिव्यक्ति हैं। विमर्शमूलक लेखन, खासकर कविता में स्त्री विमर्श के संदर्भ में उनकी उपस्थिति बहुत ही अहम है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समकालीन ओड़िया कविता में अपर्णा महांति अपने समय की सबसे चर्चित एवं अग्रणी रचनाकारों में से एक हैं। उनकी कविताओं में स्त्री मुद्दे एवं तमाम जद्दोजहद प्रमुखता से उभरकर आए हैं। ओड़िया समकालीन कविताओं में 'स्त्री अस्मितामूलक लेखन' को उन्होंने अपनी रचनाशीलता के जरिए सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है।

सूचक शब्द : विमर्श, ओड़िया कविता, स्त्री अस्मिता, कुंठाभिव्यक्ति, पितृसत्ता, भूमंडलीकरण

मूल लेख

विमर्श की दृष्टि से 80 का दशक काफी महत्त्वपूर्ण है। इस समय 'स्त्री विमर्श' जैसी अवधारणा ने एक अभूतपूर्व दर्शन के रूप में तथाकथित मूल्यों को चुनौती देते हुए नारी मुक्ति आंदोलन को जन्म दिया। लगभग हर प्रांतीय भाषा के लिए यह समय विमर्शमूलक लेखन के आरंभिक दौर के रूप में प्रकाश में आया। स्त्री विमर्श के नजरिए से ओड़िया भाषा में नब्बे दशक के उत्तरार्ध से कई रचनाकारों ने अपनी आवाज को मुखर किया। धीरे-धीरे यह स्वर और अधिक व्यापक होने लगा। भूमंडलीकरण तथा बाजारवाद से प्रभावित समाज में एक स्त्री के अस्तित्व से संबंधित सवालों ने उसे सोचने-समझने को मजबूर कर दिया। यही कारण था कि इस समय की कवयित्रियों ने अपनी वेदना एवं संघर्ष को व्यापक फ़लक पर देखना शुरू किया। इस समय ओड़िया साहित्य में अपर्णा महांति की कविताएं अपनी विशिष्ट अर्थवत्ता एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के कारण समय सापेक्ष अपने युगीन लगभग सभी विशेषताओं को आत्मसात करती नजर आती है। ओड़िया साहित्य के लिए यह समय अपर्णा महांति के प्रवेश तथा स्त्री जीवन से संबंधित विचार वैविध्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। उनकी कविताएं स्त्री-पुरुष संबंध को बेहतर ढंग से समझती हुई पितृसत्ता पर अपना आक्रोश व्यक्त करती है। इसे निर्विवाद

स्वीकार किया जा सकता है कि ओड़िशा साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित समकालीन ओड़िया स्त्री कवयित्रियों में अपर्णा महांति का स्थान बेहद साहसिक तथा महत्वपूर्ण रहा है।

समकालीन ओड़िया स्त्री कविता में बीसवीं सदी का अंतिम दशक अपने पारंपरिक मूल्यों को चुनौती देते हुए नजर आता है। ऐसे समय में ओड़िया काव्य जगत में अपर्णा का आगमन साहित्य के क्षेत्र में एक विमर्शमूलक लेखन को गति देने के साथ सामंती मूल्यों खारिज करता है। अपर्णा महांति की कविताओं में नारी अपनी अस्मिता को प्रतिष्ठित करती हुई पितृसत्ता के विरूद्ध अपने स्वर को मुखर करती है। नारी की देह संबंधी कुंठाभिव्यक्ति को सफल अभिव्यक्ति प्रदान करती उनकी कविताओं में प्रेम की गंध को सहज महसूस किया जा सकता है। समाज में स्त्री-पुरूष संबंधी विचारों का पश्चिमी रूप उनकी कविताओं की विशेषता है। अभी तक अपर्णा के एक दर्जन से भी अधिक कविता संग्रह प्रकाशित हैं। जैसे- 'अव्यक्त आत्मीयता' (1991), 'असती' (1993), 'निःशब्दरे' (1994), 'अतिथि' (1997), 'पूर्णतमा' (2002), 'झिअ पाईं झर्काटिए' (2005), 'नष्टनारी' (2007), 'माँ र कांदणा गीत' (2010), 'जोगिनी गीत' (2015), 'ऐबे मुं प्रेमरे' (2016), 'अग्नि कमलिनी' (2017), 'निजकु खोजिला बेले',' अपर्णा महांति मानंक पाईं कविता','तारा प्रति','निआं नई मझिरे' (2022) आदि है। मुख्य रूप से अपर्णा महांति की कविताओं में प्रेम एवं विद्रोह का स्वर ज्यादा मुखर जान पड़ता है। वह अपनी 'पहचान रखो' कविता में लिखती हैं -

"एक साथ गच्छित है / संसार के सब मृत जीवित नारी के
आत्मविश्वास के जीवाश्म / त्रस्त तिरस्कार
और मौन हाहाकार… ।" (महांति, 2007, पृ. 41)

पितृसत्ता के संदर्भ में स्त्री चित्त की विश्वसनीय प्रस्तुति उनकी कविताओं में सहज अभिव्यक्त हुई है। साम्यवादी नारीवाद से प्रभावित कवयित्री अपर्णा अपनी कविताओं में स्त्री मुक्ति के पथ पर प्रेम-तत्त्व की प्रगाढ़ता को स्वतः महसूस करती है। ओड़िशा की आत्मा गाँवों में बसती है। यह निर्विवाद सत्य है कि गाँव में पितृसत्तात्मक समाज की अवधारणा को एक खुला मंच मिलता है। पितृसत्ता के चलते गाँव की स्त्रियाँ भेद-भाव की आदत बचपन से ही डाल लेती हैं। मध्यवर्गीय समाज के विसंगतिपूर्ण जीवन में पारिवारिक हिंसा एवं मानसिक तनावों ने अत्याचार की सीमा का अतिक्रमण कर दिया है। गाँव में लड़कियों का ससुराल जाना परम सौभाग्य के रूप में देखा जाता है। लगभग देश के हर अंचल विशेष में इसकी सहर्ष स्वीकृति है। दुःख तो तब होता है, जब एक लड़की अत्याचार के कारण ससुराल से पिता के घर आती है और माता-पिता उसे फिर से उसे पति के घर वापस जाने को समझाते हैं। उनका मानना है, अगर वह मायके में रहेगी तो यह समाज के नियमों के विरुद्ध होगा। इस प्रकार तथाकथित सामाजिक मनोवृत्ति के विरुद्ध अपर्णा ने अपनी कलम चलाई। स्वानुभूति को उन्होंने अपने विचारों एवं काव्य-कुशलता के जरिए स्त्री आंदोलनों को नया रूप दिया।

अपर्णा महांति ने स्त्री जीवन के लगभग हर सुख-दुःख तथा हर्ष-विषाद आदि को अपनी कविताओं में जगह दी। पितृसत्ता के विरुद्ध उनका स्वर सदैव प्रबल आत्मविश्वास के साथ विद्रोही रूप के साथ विद्यमान रहा है। अपर्णा के काव्य सौष्ठव पर कवि डॉ. सीताकांत महापात्र कहते हैं – "कविता भी अपेक्षा रखती है कवि के आत्मान्वेषण और आत्मविश्वास पर। एक अच्छा कवि अपने अंदर झाँकता है, देखता है बाहर के वैचित्रमय दुनिया को और फिर लिखता है कविता। उसकी असली प्रतिबद्धता रहती है कविता के प्रति। इसीलिए जब उसे आवश्यकता होती है तब वह प्रतिवाद करता है। प्रतिवाद करता है सामाजिक वैकल्य के विरुद्ध में, अपनी

सीमित सत्ता के विरुद्ध में; यहाँ तक स्वयं विश्वसनीयता के विरुद्ध में।" (महापात्र, 2013, पृ. 23) अपर्णा महांति की यही प्रतिरोधी चेतना पितृसत्तात्मक समाज के विरुद्ध खड़ी है। 'जाने दो' कविता में वह लिखती हैं –

"अब जाने दो / मुझे गढ़नी होंगी
विदुषी कन्याओं के गाँव /इच्छामयी पत्नियों के देश
और मनस्विनी/जननियों की पृथ्वी…
केवल / वंश रक्षा की आड़ में / हयवदन वर्ण संकरों को
देह में धारण की बार-बार
मुझे / पुत्रवती होने की
अभिशाप से मुक्त कर दो।" (महांति, 2019, पृ. 06-07)

पितृसत्तात्मक समाज का वास्तविक चित्र खींचती अपर्णा ने देह प्रसंग को अपनी कविता में स्थान दिया है। साम्यवादीनारीवाद का प्रभाव उनकी कई कविताओं में देखने को मिलता है। उनकी कविताएं देह, मन तथा यौवन के यथार्थ चित्र के साथ पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था पर कठोर प्रहार करती है। वह लिखती हैं –

"वही / पाँच के संग / भौ नचाते
एक और एक के / कान में कहे
- चरित्रहीन है जी …
अमुक कह रहा था / समुक के संग
इसे केलि करते / उन्होंने देखा था
अमुक रात …।" (महांति, 2007, पृ. 17)

अपर्णा की कविता पुरुषवादी मानसिकता से ग्रसित समाज के उस वर्ग के साथ खड़ी है, जहाँ प्रेम एवं यौन संबंधों को सही एवं ठीक-ठीक नहीं समझा गया है। इस दृष्टि में उनकी 'पुनरावृत्ति' कविता को उद्धृत करना समीचीन प्रतीत होता है। भारतीय लोकतंत्र की वास्तव स्थिति को उजागर करती उनकी यह कविता सामूहिक बलात्कार के खिलाफ सख्त नियम व कानून की माँग करती है। यह कविता उन लोगों की मानसिकता पर प्रहार करती है जो इस दुर्व्यवस्था के साथ खड़े हैं–

"यौन संबंध के साथ
प्रेम को छंदबद्ध किया है, इसीलिए तो
मनुष्य की प्रवृत्ति को
प्रकृति बंधनमुक्त की है।" (महांति, 2017, पृ. 67)

'सती' कविता में अपर्णामहांति ने एक स्त्री के त्रासद अनुभवों को शब्दबद्ध करने का सफल प्रयास किया है। प्रभुत्ववादी सोच के अंतर्गत स्त्री-पुरुष संपर्क में सतीत्व का परीक्षण पुराणों में भगवान राम के द्वारा भी किया गया है। इस कविता में सती शब्द के अंतर्गत एक स्त्री के अंतर्मन में दबी आवाजों को तथा उसमें निहित एक पुंसवादी विचारधारा को पारिभाषित किया गया है। उदाहरणस्वरूप कविता द्रष्टव्य है–

"सतीत्व जाने के भय से
एक स्त्री / कभी भी

सच नहीं कह पाती है।" (महांति, 2017, पृ. 17)

गौरतलब है कि अपर्णा की 'पहचान रखो', 'आजि श्रीरामराज्यरे', 'देहेश्वरी', 'मुक्ति संहार', 'जननीर स्वीकारोक्ति', 'लेखालेखि करुथिबा स्त्रीलोक' आदि कविताओं में पितृसत्ता एवं प्रतिरोध के स्वर को प्रमुखता से देखा जा सकता है। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री को पुरुष के हितसाधन के रूप में देखा जाता रहा है। देवी, शक्ति आदि छद्म नामों से तथाकथित रूप में स्वीकार करने का ढोंग रचते हुए बाल्यावस्था से ही उसकी इच्छाओं को दमित किया जाता रहा है। उनके सभी अधिकारों को पुरुष के हाथों प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में हस्तांतरित किया जाता रहा। इस प्रकार की मानसिकता एवं विसंगति के विरुद्ध अपर्णा महांति ने अपनी कविताओं में पुरजोर विरोध किया है।

कुल मिलाकर कहें तो अपर्णा महांति ने भारतीय साहित्य में स्त्री-लेखन की परंपरा को समृद्ध करने, समसामयिक परिदृश्य की स्थितियों एवं उनकी मुक्ति को विमर्श की दृष्टि से देखने का प्रयास किया है। उनकी कविताओं ने प्रतिरोध की चेतना एवं प्रेम के शाश्वत रूप को एक सूत्र में बांधकर जीवन को नए स्वर दिये । जमीनी अनुभवों के साथ उन्होंने नए बिंबों एवं प्रतीकों के सहारे स्त्री-जीवन के तमाम व्याकरण को सच्चे अर्थों में भाषा के साथ जोड़ा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

महांति, अपर्णा.(2007). नष्टनारी. भुवनेश्वर, ज्ञानयुग प्रकाशन.

महापात्र, सीताकांत. (2013). कवितारे स्नेह ओ साहासर अनबद्य स्वर. अपर्णा पूर्णतमा, गिरीश चन्द्र साहू & डॉ. भुवनानन्द साहू). भुवनेश्वर, ज्ञानयुग प्रकाशन.

महांति, अपर्णा. (2019). झिअ पाँईं झर्काटिए. कटक: ओड़िसा बुक.

महांति, अपर्णा. (2017). अग्नि कमलिनी. भुवनेश्वर: टाइमपास प्रकाशन.